रोग नियंत्रणः

कुल्थी में जड़ सड़न,विल्ट के लिए 2.5 से 3 ग्राम कार्बेडाजिम(बाविस्टीन) से बीज उपचार करें। भुरा धब्बा एवं पावडरीमेल्डेउ के नियंत्रण हेतु 1 प्रतिशत बाविस्टीन का घोल का छिड़काव करें।

उपजः

कुल्थी का उपज 12-15 क्विं प्रति हेक्टेयर प्राप्त किया जाता है।

कटाईः

जब कुल्थी की फल भूरा से लाल रंग का हो जब छूने पर फल कड़ा लगने लगे तो उसे तना से कटाई करना चाहिए।

मिजाईः

कटाई करने के बाद(ब्यारा या कोठार) जहां पर मिजाई करने का स्थान हो वहां पर उसे फैला कर सुखा देंवे, जब सुख जाए उसके बाद उसे बैल,बेलन, टैक्टर से मिजाई करना चाहिए। इसके बाद ओसाई करने हेतु उड़ावनी पंखा से इसे भुसा से अलग कर लेना चाहिए।

उपयोगः

कुल्थी का उपयोग खाद्य पदार्थ के रूप में किया जाता है जो निम्न प्रकार है-

कुल्थी का दाल

कुल्थी का सब्जी

कुल्थी का हलवा

कुल्थी चांवल(कुल्थी भात)

अंकुरित कुल्थी

प्याज कुल्थी

कुल्थी का सुप

कुल्थी का बड़ा

के.वी.के.-नारायणपुर/आई.जी.के.वी./2014-15/2

कुल्थी की कृषि कार्यमाला

एम. के. साहू
आर. आर. कोर्राम
डी. दास
एम. के . वर्मा
आर. के. मोदी

कृषि विज्ञान केन्द्र, नारायणपुर
इं.गा.कृषि विश्वविद्यालय,रायपुर
नारायणपुर(छ.ग.) 494661

महत्वः

कुल्थी एक दलहनी फसल है, जो कि पोषक तत्वों एवं औषधियों गुणों से परिपूर्ण है, इसे कुल्थी,हिरवां इत्यादि के नाम से जाना जाता है, यह दलहनी कुल का पौधा है , यू. एस. डी. ए. के अनुसार इसका नाम हार्षग्राम रखा गया है। यह कई प्रकार के रोगों जैसे पथरी,गठीया इत्यादि हेतु अच्छा औषधि माना जाता है।

मृदाः

कुल्थी सामान्यतः सभी प्रकार के भूमियों में जिसमें पानी न रूकता हो उगाया जा सकता है, परन्तु इसके लिए 6.5 से 7.5 पी.एच. मान वाली दोमट चिकनी दोमट जिसमें कार्बनिक खाद पर्याप्त मात्रा में हो अच्छी मानी जाती है।

भूमि की तैयारी :

देशी हल या कल्टीवेटर से तीन चार बार जुताई करके भूरा-भूरा कर पाटा चलाकर समतल कर देना चाहिए, इसके बाद देशी हल से रेखा की तरह कतारें तैयार करना चाहिए ताकि इसमें बीज डाला जा सके। इसका बुआई सितम्बर-नवम्बर में कर लेना चाहिए।

बीज दर :

25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज का उपयोग किया जाता है, बीज को दो से.मी. गहराई में डालना चाहिए पौध से पौध की दूरी 10 से.मी. एवं कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. रखना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक :

40 किलोग्राम यूरिया एवं 120 किलोग्राम एस.एस.पी. प्रति हेक्टेयर के हिसाब से उपयोग करना चाहिए, इसके बाद 2 प्रतिशत डी.ए.पी. घोल पौध वृद्धि के समय एवं दो प्रतिशत फल विकास के समय छिड़काव करना चाहिए।

सिंचाई :

बुआई के बाद तीन दिन के अन्दर एक सिंचाई करना चाहिए,परन्तु भूमि में पानी भरना नही है,इसके बाद यदि खेत सुखा हो तभी सिंचाई करें तथा इसमें फूल निकलते समय एवं फलों के बढ़ते समय सिंचाई करना चाहिए जिससे अच्छी उत्पादन प्राप्त होती है।

खरपतवार नियंत्रणः

खरपतवार की समस्या अधिक नही आता है, परन्तु इसमें समान्यतः मोथा,दूब,सत्यानशी इत्यादि खरपतवार उगते है वैसे खरपतवार नियंत्रण के लिये प्रिएमजेंस बासालिन 2 मिली प्रति लीटर पानी के हिसाब से बोने के बाद अंकुरण के पूर्व करना चाहिए एवं हथों से निदाई करना चाहिए।

किट नियंत्रण :

इसमें समान्यतः तना मक्खी, प्रारंभीक में आता है इसके लिए क्यूनालफास 2 मिली प्रति लीटर पानी के हिसाब से 2 छिड़काव करना चाहिए, इसके अलावा एफिड, सफदे मक्खी इत्यादि लगते है,जिसके नियंत्रण हेतु डाई मेथोएड(रोगर) 1 मिली प्रति लिटर पानी के हिसाब से छिड़काव करना चाहिए।